Vol. 5 | No. 5 | October 2019

Impact Factor: 4.197 | ISSN: 2454-5503

CHRONICLE OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES

A Peer Reviewed Bimonthly International Journal

Special Issue On

IMPACT OF SOCIAL MEDIA ON SOCIETY

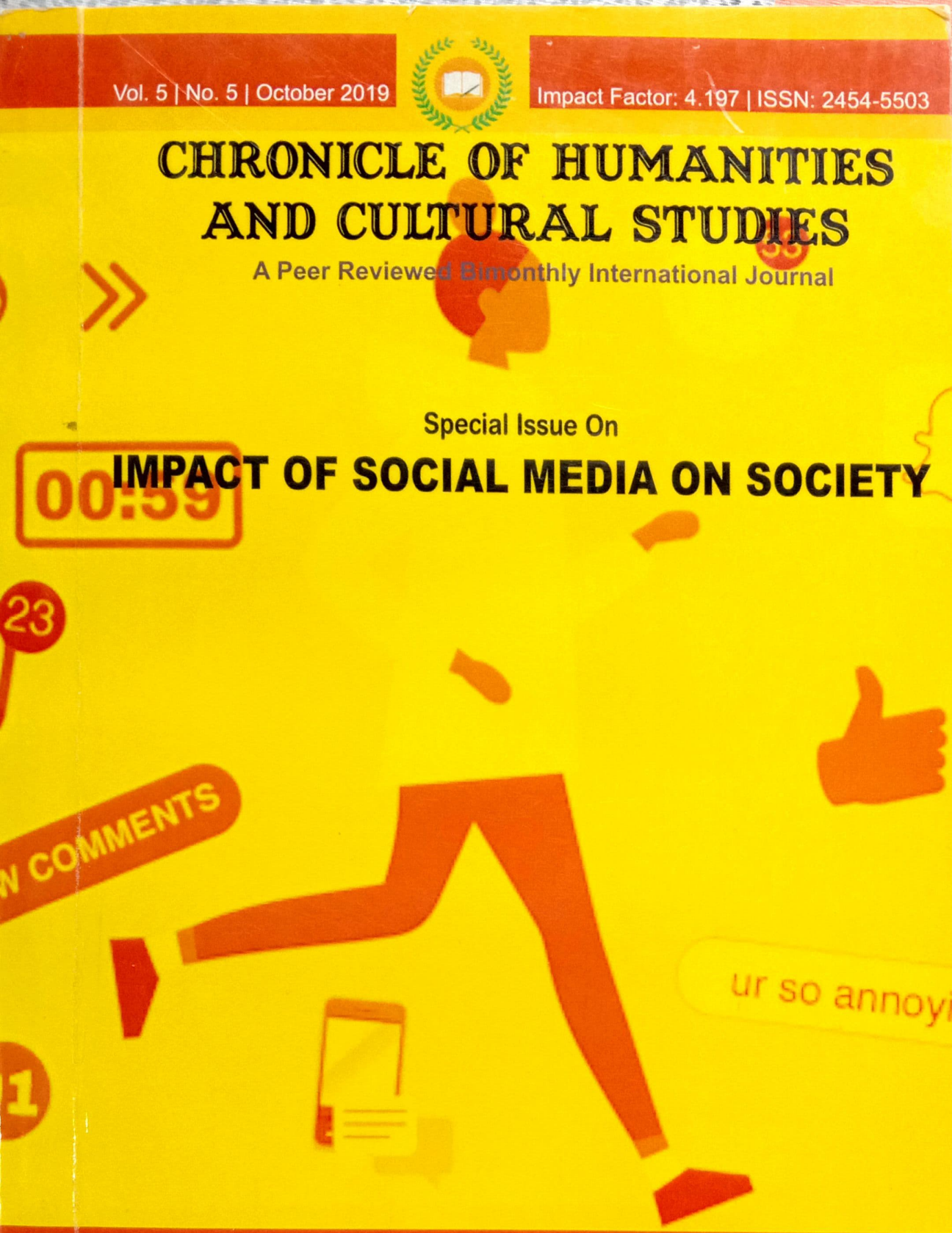

Guest Editor
Dr. Vasant Satpute

Associate Editor
Dr. M. D. Kachave

Assistant Editors
Dr. B. V. Andhale
Dr. M. G. Somvanshi
Dr. A. B. Sarkale

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College Sonpeth Dist Parbhani

४३. समाज माध्यमे आणि समाज / **डॉ. मिरा वि. फड** | 198

४४. सोशल मिडिया ही तत्कालीन परिस्थितीत काळाजी गरज / **डॉ. गंगणे आर. व्ही.** | 202

४५. सोशल मिडियाच्या माध्यमातून होणारे लैंगिक गुन्हे / डॉ.शिवाजी परळे | 208

४६. समाजमाध्यमांचा समाजावरील प्रभाव / **बांगर नितीनकुमार बा .** | 215

४७. सोशल मिडिया आणि फेकन्युज / **डॉ. आंधळे बी. व्ही.** | 218

४८. समाज माध्यमाचे दुष्परिणाम / **डॉ. जाधव अशोक का.** | 221

४९. छावा व किशोर मासिकाने प्रसिध्द केलेल्या साहित्याचा विषयनिहाय व साहित्य निहाय अभ्यास / **अशोक मा. बांगर** | 225

५०. मुलांच्या मुद्रित प्रसार माध्यमातील साहित्याची मुलांसाठीची उपयुक्तता / **अशोक मा.बांगर** | 228

५१. सामाजिक माध्यमांचे परिणाम व उपाय / **डॉ.भिसे आर.एम.** | 231

५२. सोशल मिडीया : मानवी जीवनावर पडलेला प्रभाव / **डॉ.कोटीवाले व्हि.एम.** | 236

५३. प्रसारमाध्यमे : स्वरूप, उद्गम आणि विकास / डॉ.सा.द.सोनसळे | 239

५४. व्यक्तिसंबंधावर सोशल मिडीयाचा प्रभाव : बिघडते सामाजिक संबंध / **वंदना गायकवाड** | 243

५५. सोशल मीडियाचा समाजमनावरील दुष्परिणाम : एक अभ्यास / **डॉ. रामानंद बा. व्यवहारे** | 247

५६. सोशल मिडिया का समाज पर प्रभाव / **बांगर आकाश शे.** | 255

५७. समाज और सोशल मीडिया / **डॉ.मारोती उ. खेडेकर** | 259

५८. विश्वभाषा हिन्दी और मिडिया / **डॉ.कुलकर्णी वनिता बा.** | 262

५९. सोशल मीडिया और सामाजिक संबंधोंपर सैद्धांतिक नजरिया / **विनय कुमार** | 269

६०. सोशल मीडिया रिपोर्टिंग का सवाल / **डॉ. वडचकर एस.ए.** | 273

Lala Ramesh Warpudkar
Pa
...041

59.

विश्वभाषा हिन्दी और मिडिया

प्रा.डॉ.कुलकर्णी वनिता बाबुराव
हिन्दी विभागाध्यक्षा
कै.रमेश वरपुडकर महाविद्यालय,सोनपेठ जि.परभणी.

वैश्विकरण के इस युग में मिडिया अपने आप में एक `अर्थतंत्र` बन चुका है । आज मीडिया हर एक के जीवन में काई - न कोई भूमिका निभाते नजर आ रहा है । वह देश की आवाज बन गया है । आज मीडिया ने इंसान के रोजमर्श की जिंदगी के मायने बदल दिये है । विज्ञान का विकास जैसे होता गया, वैसे हमारा जीवन बदलता गया । पहले तो धर्म हमार जीवन नियंत्रित करता था, पर आज विज्ञान ने उसकी जगह लेली । विज्ञान ने हमे गतिशील बनाया लेकिन साथ ही समय की कमी हमे सताने लगी । इसका एक ही परिणाम है कि आज कई नई संज्ञाएँ हमारा जीवन प्रभावित करने लगी । उसमें से ही एक है वैश्विकरण के लिए भूमंडलीकरण, जागतीकरण, ग्लोबलायजेशन जैसे शब्दों का प्रयोग होता है । वौश्वीकरण एक ही विश्व व्यवस्था कायम करने के लक्ष्य को लेकर संकल्पित है । यह विश्व बाजारवाद के रूप पर आरूढ होकर शिक्षा, प्रोद्योगिकी के सहारे वैश्विक अर्थ तंत्र को प्रतिष्ठित करने के लिए हर एक देश की अर्थव्यवस्था से अनिवार्य रूप से जुडने के प्रति प्रतिबध्द है ।

भारत अपनी भौगोलिकता से सजा सँवरा देश है । आजादी के बाद भारत ने रफ्तार से विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में विकास किया है । भारत प्रगति के उस मकान पर है कि भारत युवकों का देश यानि यंग इंडिया के रूप में जाना जाएगा । और प्रगति के कारण सभी युवाओं को रोजगार भी उपलब्ध होगा । आज का युग मिडिया का युग है । यह सुचनाओं के विस्फोट का युग है । आज हमारे इर्द - गिर्द मिडिया का प्रभाव गाहे-ब गाहे देखने को मिलता है । फिर चाहे वो प्रिंटमिडिया हो या दृश्य-श्रव्य मिडिया हो या फिर इंटरनेट आदि । मिडिया ने हमारे जीवन में अतिक्रमण किया है । यह अतिक्रमण हमारे रहण-सहण, खान-पान से लेकर हमारी सोंच तक पहुँच चुका है । मीडियाने सरहदों की बंदिशों को लाँघ दिया है । मीडिया की जान भाषा है । सरल अर्थो में जानने की कोशिष करें तो मिडिया एक माध्यम है, जिसका काम सूचनाओं विचारों, आदि को लोगों तक, पाठकों तक पहुँचाना है । लेकिन इस माध्यम की माध्यम भाषा है । विश्व में भाषा की अस्मिता महत्वपूर्ण विषय बन गया है । वैश्विकरण का यह दौर प्रत्येक देश के शक्ति परीक्षण का है । जिसमें अभिव्यक्तियाँ अपनी महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाएँगी

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth
Dist. Parbhani

वर्तमान दौर में मिडिया के माध्यम से हिन्दी सारी दुनिया में पहुँच रही है । बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ दक्षिण एशिया, के बाजार में प्रवेश करने हेतु हिन्दी की उपयोगिता में उत्तरोत्तर बढोत्तरी करने जा रही है । भारत देश की तेज गति से विकसित देश हो रही अर्थव्यवस्था ने विश्व को अपनी ओर देखने के लिए विवश कर दिया है । विश्व में हिंन्दी की लोकप्रियता और उपयोगिता का विश्लेषण हिन्दी को एक उर्जापूर्ण भविष्य की ओर ले जा रहा है । इसमें इंटरनेट की सहभागिता सबसे ज्यादा है । हिन्दी की उपयोगिता आज वर्तमान युग में बढ रही है । डॉ विनोद गोदरे कहते है -``जीवन जगत की विभिनन आवश्यकताओं अथवा लोक व्यवहार उच्च शिक्षा तंत्र तथा जीविकोपार्जन आदि के लिए विशेष अभ्यास और ज्ञान के द्वारा विशेष शब्दावली में विशेष अभिव्यक्त इकाइयों एवं संम्रेषण कौशल में समाज - सापेक्ष व्यवहारिक प्रयोजन की सम्पूर्ति के लिए प्रयुक्त की जानेवाली विशेष भाषा प्रयुक्तियों को प्रयोजनमूलक हिन्दी कहा जा सकता है।``१

हिन्दी साहित्य इंनटरनेट के जरिए देश तथा विदेश में बडे पैमाने पर फैल रहा है । उद्गम, कृत्या, प्रतिध्वनि, सृजनगाथा, लेखनी, हिन्दी परिचय, छाया, क्षितिज, गर्भनाल, अभिव्यक्ति आदि जैसी अनेक वेब पत्रिकाएँ हिदी साहित्य के बेहत्तर छवी को निरंतर निखार रही है । इन पत्रिकाओं को विदेशों से बडा पाठक वर्ग मिल रहा है । अनेक वेब पत्रिकाएँ तथा ब्लाग हिंन्दी के महत्व को दर्शाते हुए दिखाई दे रहे है । इंटरनेट की दुनिया में हिन्दी का साम्राज्य फैलाता जा रहा है प्रसिदध सर्च इजन गूगल के प्रमुख एरिक स्मित का मानना है कि,``अगले पाँच से दस सालों में हिंदी इंटरनेट पर छा जाएगी और अंग्रेजी तथा चीनी के साथ इंनटरनेट की दुनिया की प्रमुख भाषा होगी``२ वैश्विकरण के युग में मीडिया ने अपना अहम् स्थान बना लिया है । साहित्य को दूरगामी और व्यापक फलक पर ले आने में मीडिया का सहयोग बहुत महत्वपुर्ण सिध्द हो रहा है । मिडिया के द्वारा आम जनता तक समाचार पहुँचाने में सरलता रही । आजकल दृश्य-श्रव्य मीडिया ने देश -दुनिया में खलबली मचा दी है । मीडिया और साहित्य समाज की दशा और दिशा को एक नई गति देने का काम करता है.

हिन्दी भाषा कार्यालयीन एंव तकनीकी के रूप में प्रतिष्ठित है । हिन्दी भाषा आज यह जीविकोपार्जन का साधन बन गयी है । आज के इस दौर में हिन्दी की गतिविधियों फैल चुकी है । आधुनिक युग में कम्प्युटर और सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में रोजगार के नये-नये क्षेत्र आ रहे है । जिसमें कई नाम आते है अंतरिक्ष के क्षेत्र में आयुर्विज्ञान, चिकित्सा, बैंक, पुस्तकालय, मौसम, संगित के क्षेत्र कम्प्युटर फोटोग्राफी आदि कई क्षेत्र में रोजगार के अवसर प्राप्त हो रहे है । जिसमे राजभाषा हिन्दी का अपना महत्वपुर्ण योगदान है । आज के निर्भिक नवयुवकों के लिए खुब रोजगार के अवसर विकसित हो रहे है । आज के दृश्य श्राव्य इलेक्ट्रॉनिक संचार माध्यम की दुनिया में जैसे दुरदर्शन, फिल्म, कम्प्युटर, इंटरनेट फॅक्स आदि ने तो

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College
Parbhani

क्रांती ही कर दी है इसपर म.गांधीजी ने लिखा है ``हिन्दी ही हिंन्दुस्थान के शिक्षित समुदाय की सामान्य भाषा हो सकती है, यह बात निर्वीवाद है । यह कैसे हो केवल यही विचार करना है । जिस स्थान को अंग्रेजी भाषा लेने का प्रयत्न कर रही है और जिसे लेना उसके लिए असंभवन है । वही स्थान हिन्दी को मिलना चाहिए । क्योंकि हिन्दी का उस पर पूर्ण अधिकार है ।``३

वर्तमान समय में हिन्दी विश्व की अत्यंत महत्वपुर्ण भाषा के रूप में उभर चुकी है । विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढने की व्यवस्था हो रही है । हिन्दी भाषा की दृष्टि से वर्तमान समय अनेक प्रकार के सुअवसरों से युक्त दिखाई देता है । मुक्त बाजार व्यवस्था तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत के बढते दबदबे का यह परिणाम है । साथ ही भारत जैसे विशाल बाजार में अपने उत्पाद को बेचने के लिए हिंदी जैसी संम्पर्क भाषा का उपयोग करने की आवश्यकता को महसूस किया जा रहा है । अत्यंत तीव्र गति से विकसित हो रही भारतीय अर्थव्यवस्था का आकर्षण विश्व के तमाम देशों में देखा जा सकता है । उभरती महासत्ता को समझने के लिए भी हिन्दी भाषा को समझना दुनिया के अन्य लोगों को आवश्यक लग रहा है । हिंदी भारत की अधिकृत राजभाषा होने के साथ-साथ तथा भारत की एक प्रभावशाली संपर्क भाषा होने के कारण इसमें रोजगार के अपार अवसर उपलब्ध है । व्यपार की दृष्टि से देखे तो इंटरनेट का व्यवसाय तेजी से बढ रहा है । कई बिलियन डॉलरों की कमाई इंटरनेट पर प्रसारित हो रहे विज्ञापनों से हो रही है । यह तथ्य चौकानेवाला है, प्रमासाक्षी जैसे हिन्दी के पोर्टल पर पता चलता है कि, इस प्रतिमाह एक करोड से भी ज्यादा हिट्स का आँकडा प्राप्त होता है ``सर्च इंजिन गूगल पर हिन्दी राईटर्स प्रविष्ठि माँगने पर १,२०,००० प्रविष्टियाँ मिल जाती हैं। नेट पर हिंदी के एक करोड से भी ज्यादा पन्ने है ।``४ स्पष्ट है कि इंटरनेटपर हिंन्दी भाषा की माँग बढ रही है ।

सिनेमा संचार का एक सशक्त माध्यम है वैसे जो कथानक संवाद गीत और अभिनय शीलता आदि को लेकर सिनेमा और साहित्य मे घनिष्ठ संबंध रहा है । हिंदी सिनेमा ने हिन्दी के महान कथाकारों प्रेमचंद फणीश्वर नाथ रेणु, राही मासूम रजा, भीष्म साहनी आदि को अपने से जोडने की कोशीश की थी, नीरज नेपाली, प्रदीप शैलेंद्र, भरत व्यास राजेंद्र कृष्ण आदि से गीत लिखवाये है । दूरदर्शन ने जन-मन के परिष्कार हेतु उत्कृष्ट साहित्य की प्रस्तुति की थी । वस्तुतः दूरदर्शन के गद्यपरक कथात्मक कार्यक्रम एक प्रकार से साहित्य के ही दूरदर्शनीकरण है । जब इसमें धारावाहिकों की सुरूवात की, तब अनेक साहित्यिक व्यक्तित्व भी इससे जुडे । `बुनियाद` और हम लोग जैसे धारावाहिकों ने जो कीर्तिमान स्थापित किया उसमे मनोहर श्याम जोशी के साहित्यिक व्यक्तित्व की अमिट छाप थी । `रामायण और महाभारत` जैसे उपजीव्य ग्रन्थों की कथा और उनमें निहित संदेशो को जनता तक पहुँचाकर दूरदर्शन ने अपनी पुहँच की ताकत का एहसास कराया था । निर्मला

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College Dist. Parbhani

कर्मभूमि, गोदान, मैला आँचल, तमस, रथचक्र, मृत्युंजय, रागदरबारी, गणदेवता, आदि महत्वपूर्ण आधुनिक भारतीय साहित्य तथा पौराणिक घटना -प्रसंगो एवं कथा-संदर्भो से जनता तक संप्रेषित कर दूरदर्शन ने साहित्य और समाज को अपने से जोडा है

व्यावहारिक और सांस्कृतिक कारणों से विश्व के भाषिक समाज एक दूसरे के निकट आ रहे है । विश्व के विकसित देशों में अपनी भाषा, बोली, रीति-रिवाज, शैली परंपरा आदि का स्थान बनाने में इसकी महत्ता सर्वोपरी है अनुवाद के द्वारा हम केवल दूसरी भाषाओं के ज्ञान भंडार काही परिचय प्राप्त नही करते, बल्कि दूसरे राज्यों तथा देशों की संस्कृति को भी समझ सकते है । ``अनुवाद एक भाषातंरित भावगत प्रक्रिया है जिसमें लिपी एवं शब्दों का चोला बदला जाता है पर अर्थ मूल का ही रहता है ।`` ५

मीडिया एक शक्ति है इसलिए तो इसे लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना गया है । मीडिया का प्रभाव सीधा समाज और संस्कृति पर पडता है । बाद में साहित्यकार अपनी लेखनी के माध्यम से साहित्य में उसका चित्रण करता है । इलेक्ट्रानिक मीडिया के प्रसार के साथ-साथ साहित्य का भी व्यापक रूप से प्रचार-प्रसार होने लगा । संगोष्ठियों की बारिश बरसने लगी है । साहित्यकारों को नया जोश मिला । इलेक्ट्रानिक मीडिया ने हमारे देश में समाज, संस्कृति और साहित्य के क्षेत्र में बदलाव किया, बाजारीकरण किया और साहित्य की कई अंशो तक व्यापकता बढायी । तात्पर्य यह है कि वैश्विकरण की चुनौतियों का सामना करने के बावजूद भी हिन्दी ने अपना वजूद निरंतर बनाए रखा है ।विश्वभाषा बनने की होड मे यह अव्वल नम्बर पर है । सूचना प्रोद्योगिकी के इस युग में कंम्प्युटर इंटरनेट, दूरदर्शन, फिल्म, रेडियों समाचार पत्र, इंटरनेट, मोबाईल विज्ञापन, अनुवाद तथा संप्रेषण के अन्य माध्यमों के जरिये हिन्दी अपनी विजय पतका निरंतरता से फहरा रही है ।

संदर्भ :-

१. प्रयोजनमूलक हिन्दी - डॉ विनोद गोदरे - पृ १३
२. अनभै - त्रैमासिक - सं.रतनकुमार पाण्डेय - जुलाई - सितम्बर २००७ पृ ३४
३. संम्पूर्ण गांधी वाडमय - खण्ड १३ - पृ १२४
४. मीडिया विमर्श - दूर्गा प्रसार आग्रवाल - पृ ३१
५. वैश्विकरण के परिप्रेक्ष्य में भाषा और साहित्य - प्रो.डॉ अंबादास देशमुख - पृ ७०

❑❑❑

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, S... Dist. Parbhani